सूरतुल मोमिनून

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल मोमिनून मक्की सूरतों के उस सिलसिले की आख़री सूरत है जो सूरत युनुस से शुरू हुआ था। इस सिलसिले या ग्रुप में चौदह मक्की सूरते हैं और हुज्म के ऐतबार से पूरे क़ुरान में मक्की सूरतों का ये सबसे बड़ा गुलदस्ता है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

आयात 1 से 11 तक

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ ۙ﴿۴﴾
وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰٓى اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَيۡرُ مَلُوۡمِيۡنَ ۚ﴿۶﴾ فَمَنِ ابۡتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡعٰدُوۡنَ ۚ﴿۷﴾
وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ ۙ﴿۸﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَلٰى صَلَوَاتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡوٰرِثُوۡنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡفِرۡدَوۡسَ ؕ
هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۱۱﴾

इस सूरत की इब्तदाई ग्यारह आयात मुताअला क़ुरान हकीम के मुन्तखब निसाब के तीसरे हिस्से में शामिल हैं। इस हिस्से के दुरूस में आमाले सालेहा की तफ़सीलात एक ख़ास तदरीज से ज़ेरे बहस आई हैं। इस तदरीज में सबसे पहली तरजीह तो फ़र्द और उसके आमाल की है। यानि एक बंदा-ए-मोमिन के आमाल इन्फ़रादी हैसियत से सालेह और नेक हों और उसके सीरत व किरदार की तामीर बेहतर बुनियादों पर असत्वार हो। चुनाँचे इस तीसरे हिस्से का पहला दर्स सूरतुल मोमिनून की पहली ग्यारह आयात पर मुश्तमिल है। इन ग्यारह आयात में बंदा-ए-मोमिन की सीरत की असासात बयान की गई हैं। ये बुनियादें ठोस व पुख्ता होंगी तो सीरत की इमारत भी मज़बूत होगी। चुनाँचे इस तीसरे हिस्से में क़ुरान हकीम के मुख्तलिफ़ मक़ामात के दुरूस की मदद से आमाले सालेहा के मुबाहिस को तदरीजन आगे बढाया गया है कि मज़बूत और नेक सीरत के हामिल अफ़राद से जब ख़ानदान वजूद में आएगा तो उनकी आइली ज़िंदगी का नक़्शा कैसा होगा। नेक और सालेह अफ़राद पर मुश्तमिल मआशरे के खद्दो-ख़ाल कैसे होंगे और फिर मआशरे की बुलंद तरीन सतह पर यानि रियासती मामलात में इन अफ़राद के सीरत व किरदार की करामात का ज़हूर किन-किन सूरतों में होगा।

आयत 1

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾

"काम निकाल ले गए अहले ईमान।"

इस आयत का यह तर्जुमा शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूद हसन देवबंदी रह. का है। मगर खुद हज़रत शेख़ुल हिन्द रह. का कहना है कि उन्होंने "मौज़ुल क़ुरान" में शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी रह. का तर्जुमा ही इख्तियार किया है और इसमें कहीं-कहीं ज़बान की तब्दीलियों के अलावा कोई और तब्दीली नहीं की। गोया बुनियादी तौर पर यह तर्जुमा शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी रह. का है और मेरे नज़दीक़ लफ्ज़ फ़लाह की असल रूह के क़रीब तरीन है।

“फ़लाह” का तर्जुमा बिल उमूम “कामयाबी” से किया जाता है, लेकिन इसके मफ़हूम को दुरुस्त अंदाज़ में समझने के लिये ज़रूरी है कि लफ्ज़ “फ़लाह” के हक़ीक़ी और लुग्वी मायने को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लिया जाए। इस माद्दे के लुग्वी मायने हैं: “फाड़ना”। इसी मायने में किसान को अरबी में “फ़ल्लाह” कहा जाता है, इसलिये कि वह अपने हल की नोक से ज़मीन को फाड़ता है। अरबी की एक कहावत है: اِنَّ الحَدِید بالحَدِید یفلَحُ यानि लोहा लोहे को काटता है। इस तरह फ़लाह का मफ़हूम गोया फ़लक़ के क़रीबतर है। सूरतुल अनआम की आयत 95 में लफ्ज़ “फ़लक़” इसी मफ़हूम में आया है: { اِنَّ اللّٰہ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰی} “यक़ीनन अल्लाह तआला गुठलियों और बीजों को फाड़ने वाला है।” इससे अगली आयत में यही लफ्ज़ अल्लाह तआला के लिये नमूदे सुबह के हवाले से इस तरह इस्तेमाल हुआ है: {فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ} यानि वह तारीकी का पर्दा चाक करके सुबह को नमूदार करने वाला है। चूँकि फ़लाह और फ़लक़ दोनों क़रीबुल मायने अल्फ़ाज़ हैं और दोनों के मायने फाड़ना है इसलिये आयत ज़ेरे नज़र में फ़लाह का मफ़हूम समझने के लिये {فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰی} के हवाले से गुठली के फ़टने और उसके अन्दर से कोंपलें बरामद होने के अमल को ज़हन में रखें। जिस तरह गुठली के अन्दर पूरा पौदा बिलक़ुव्वत (potentially) मौजूद है, इसी तरह इंसान के अन्दर भी उसकी अना या रूह अपनी तमामतर ख़ुसूसियात के साथ मौजूद है। जिस तरह गुठली के फ़टने (फ़लक़) से दो कोंपलें बरामद होती हैं और फिर उनसे पूरा दरख़्त बनता है इसी तरह जब इंसानी वजूद के अन्दर मौजूद माद्दियत के पर्दे चाक (फ़लाह) होते हैं तो उसकी अना या रूह बेनक़ाब होती है और उसकी नशो-नुमा से उसकी मअनवी शख्सियत तरक्क़ी पाती है। इंसान की इसी अना या रूह को इक़बाल ने ख़ुदी का नाम दिया है और इसको उजागर (develop) करने के तसव्वुर पर अपने फ़लसफ़े की बुनियाद रखी है। डॉक्टर रफ़ीउद्दीन मरहूम ने ख़ुसूसी तौर पर आईडियल या आदर्श के फ़लसफ़े के हवाले से (इस ज़िमन में गुज़िश्ता सफ़हात में सूरतुल हज की आयत 73 की तशरीह भी मद्देनज़र रहे) अपनी मअरकतुल आरा किताब The idealogy of the future में इक़बाल के फ़लसफ़ा-ए-ख़ुदी की बेहतरीन ताबीर की है।

इंसान बज़ाहिर एक माद्दी वजूद का नाम है। इस वजूद में हड्डियाँ हैं, गोश्त है और दीगर आज़ा हैं। लेकिन इस माद्दी वजूद के अन्दर इसकी अना और रूह भी है जो इसकी असल शख्सियत है। इंसान कहता है मेरा हाथ, मेरा पाँव, मेरी आँख, मेरी टांग, मेरा सिर, मेरा जिस्म! लेकिन इस “मेरा” और “मेरी” की तकरार में “मैं” कहाँ है और कौन है? ये “मैं” दरअसल इंसान की अना या रूह है। यानि इंसान को हैवानों के मुक़ाबले में सिर्फ़ अक़्ल व शऊर की दौलत से ही नहीं नवाज़ा गया बल्कि उसे रूहे रब्बानी की नूरानियत भी अता की गई है। बक़ौल अल्लामा इक़बाल:

दम चीस्त? पयाम अस्त! शनेदी नशनेदी?
दर ख़ाक-ए-तू यक जलवा-ए-आम अस्त नदेदी?
दीदन दिगर अमोज़! शनीदन दिगर अमोज़!!

इंसानी जिस्म के अन्दर उसकी रूह माद्दी गिलाफ़ों में लिपटी हुई है। गोया ये एक मख्फ़ी ख़ज़ाना है जिसे खोद कर निकालने की ज़रूरत है। अगर इस खज़ाने को काम में लाना है तो “फ़ल्लाही” के अमल से माद्दियत के पर्दों को चाक करना होगा और आयत ज़ेरे नज़र में قَدْ اَفْلَحَ के अल्फ़ाज़ इसी मफ़हूम में आए हैं कि मोमिनीन सादिक़ीन ने अपनी रूहों पर पड़े हुए

माद्दियत के पर्दों को चाक करके असल खज़ाने यानि रूह को बेनक़ाब करने और उसकी नशो-नुमा (develop) करने का मुश्किल काम कर दिखाया है। जबकि आम इंसान की तमामतर तव्वजोह अपने हैवानी वजूद पर ही मरकूज़ रहती है। ना वह अपनी रूह की ख़बर लेता है और ना ही उसकी गिज़ा और नशो-नुमा का अहतमाम करता है। इसका नतीजा ये होता है कि ऐसे इंसान की रूह सिसक-सिसक कर मर जाती है और उसका जिस्म उसकी रूह का मक़बरा बन जाता है। बज़ाहिर ऐसे शख्स का शुमार ज़िन्दा इंसानों में होता है लेकिन हक़ीक़त में वह मुर्दा होता है। मसलन अबु जहल ज़िन्दा होते हुए भी मुर्दा था। वह अँधा और बहरा था, इसी लिये ना तो वह मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को पहचान सका और ना आपकी दावत को सुन सका। इसके बरअक्स एक बंदा-ए-मोमिन है जो हक़ीक़त में ज़िन्दा है, इसलिये कि उसकी रूह ज़िन्दा है। जैसे कि सूरतुल नहल की आयत 97 में इरशाद हुआ: {فَلَنُحۡيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ} "तो हम ज़रूर उसे अता करेंगे एक पाकीज़ा जिंदगी।" चुनांचे जो शख्स भी अपनी ख़ुदी के इरतक़ाअ (development of self) और अपने किरदार की तामीर (development of character) का मुश्किल कारनामा सरअंजाम दे पाएगा वही हक़ीक़त में कामयाब क़रार पाएगा और वही आयत ज़ेरे मुताअले के हवाले से قَدۡ اَفۡلَحَ का मिस्दाक़ ठहरेगा। और यह कामयाबी हर इंसान की पहुँच में है, क्योंकि रूह की दौलत तो हर इंसान को अता हुई है। हिंदी शायर भीक के बक़ौल: *"भीका भूका कोई नहीं, सबकी गुदड़ी लाल!"* यानि भूका और नादार कोई भी नहीं है, हर इंसान की गठरी में लाल मौजूद है, बस उस गठरी की गिरह खोल कर उस "लाल" या दौलत को दरयाफ्त करने और उसे काम में लाने का फ़न उसे आना चाहिये। यही नुक्ता इस ख़ूबसूरत फ़ारसी शेर में एक दूसरे अंदाज़ में पेश किया गया है:

सितम अस्त गर हो सत कशद कि बे सिरे सरो व समन दरा
तू ज़गनचा कम ना दमीदा दरे दिल कशाबा चमन दरा!

यानि तुम्हारे अन्दर भी एक महकता हुआ चमन मौजूद है, तुम अपने दिल के दरवाज़े से दाख़िल होकर उस चमन की सैर से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकते हो।

इसी हक़ीक़त को क़ुरान हकीम (अज्ज़ारियात 21) में इस तरह वाज़ेह किया गया है: {وَفِىۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ} यानि खुद तुम्हारे अंदर मअरफ़त का सामान मौजूद है मगर तुम लोग उससे ग़ाफिल हो। उपनिषद् के एक जुम्ले का अंग्रेज़ी तर्जुमा इस तरह है:

"Man in his ingnorance identifies himself with the material sheeths which encompass his real self."

यानि इंसान अपनी जहालत के बाइस इन माद्दी गिलाफ़ों ही को अपनी ज़ात समझ बैठता है जो उसकी ज़ात (अना या रूह) के गिर्दा-गिर्द लिपटे हुए है। और यूँ वह ना खुद को पहचान पाता है और ना ही अल्लाह तआला की मअरफ़त उसे हासिल होती है। चुनाँचे अल्लाह की मअरफ़त हासिल करने के लिये अपनी ज़ात की मअरफ़त ज़रूरी है, जैसे कि सूफ़िया का क़ौल है: مَنۡ عَرَفَ نَفۡسَہ فَقَدۡ عَرَفَ رَبَّہ "जिसने अपने आपको पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।" दूसरे लफ़्ज़ों में इसका मफ़हूम ये है कि जो अपनी "अना" (self) से ग़ाफ़िल रहा वह मअरफ़ते इलाही से भी महरूम रहा। यही नुक्ता है जो सूरतुल हश्र की आयत 19 में इस तरह वाज़ेह फ़रमाया गया है: {وَلَا

{وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ} "उन लोगों की तरह ना हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें अपने आप से गाफ़िल कर दिया।" चुनाँचे लफ्ज़ फ़लाह का यह मफ़हूम ज़हन में रख कर इस आयत को पढ़ें तो बात वाज़ेह हो जाती है कि अपनी शख्सियत और ज़ात के माद्दी गिलाफ़ों को फाड़ कर अपनी मअनवी शख्सियत और रूह को उजागर करने और इसके ज़रिये से इरफ़ाने ज़ात और फिर मअरफ़ते इलाही तक पहुँचने जैसे मुश्किल मराहिल, अहले ईमान कामयाबी से तय कर लेते हैं। और वो कौनसे अहले ईमान हैं:

आयत 2

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ﴿٢﴾

"वो जो अपनी नमाज़ों में खुशूअ इख़्तियार करने वाले हैं।"

कामयाब, बामुराद और फ़ाइज़ुल मराम अहले ईमान वह हैं कि नमाज़ पढ़ते हुए उनकी तव्वजोह रकअतों की गिनती पूरी करने पर ही मरकूज़ नहीं होती बल्कि वह अपनी नमाज़ों में आजिज़ी और फ़रोतनी इख्तियार करते हैं। उनकी नमाज़ें हक़ीक़ी खुशूक़ व खुज़ूअ का मंज़र पेश करती हैं।

आयत 3

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾

"और जो लग़ु बातों से अराज़ करने वाले है।

"

यानि उनका दूसरा वस्फ़ है बेकार बातों से एहतराज़ करना, बचना, दामन बचाए रखना। लग्व से मुराद गुनाह या मअसियत का काम नहीं, बल्कि हर ऐसा अमल या काम है जो बे-फ़ाएदा और फ़ज़ूल हो। जैसे लोग महफ़िल जमा कर ताश खेलते हैं और वक़्त को ऐसे ज़ाया करते हैं जैसे यह कोई बोझ (liability) हो और इसे सिर से उतार फेंकना गुज़ीज़ हो। उन्हें अहसास नहीं होता कि ये वक़्त ही तो इंसान का सबसे बड़ा सरमाया (asset) है। इस वक़्त से फ़ायदा उठा कर ही इंसान अपनी आक़बत को सँवार सकता है और जो इस वक़्त को फ़ज़ूल में ज़ाया करता है वह गोया अपनी आक़बत को ज़ाया करता है। इस आयत में मोमिनीने सादिक़ीन की यह सिफ्त बयान की गई है कि वह मोहलते ज़िन्दगी को अपना क़ीमती सरमाया समझते हैं। उन्हें ज़िन्दगी में एक-एक लम्हे की अहमियत का अहसास होता है। वह जानते हैं कि सिर्फ़ एक दफ़ा "सुब्हान अल्लाह" कहने से अल्लाह के यहाँ उनके दर्जात किस क़दर बुलंद हो जाते हैं। चुनाँचे वह अपना वक़्त फ़ज़ूल और बे-मक़सद मसरूफ़ियात में ज़ाया नहीं करते। वह ज़िंदगी के एक-एक लम्हे से फ़ायदा उठाते हैं और उसे अपनी शख्सियत की तामीर और आख़िरत के अज्र व सवाब के हुसूल के लिये सर्फ़ करते हैं।

आयत 4

"और वह जो हर दम अपने तज़किये की तरफ़ मुतवज्जह रहने वाले हैं।"

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُونَ ۝

ये कामयाब और बामुराद अहले ईमान का तीसरा वस्फ़ बयान हुआ। यहाँ "ज़कात" का लफ्ज़ इस्तलाही मायने में नहीं बल्कि अपनी लुग्वी मायने में आया है और इससे मुराद तज़किया-ए-नफ्स है। इसलिये कि यह इब्तदाई मक्की दौर की सूरत है और उस वक़्त तक ज़कात अदा करने का अभी कोई तसव्वुर नहीं था। वैसे भी क़ुरान हकीम में ज़कात के साथ अमूमन लफ्ज़ "ईअता" आता है। चुनाँचे आयत का मफ़हूम यह है कि अल्लाह के मोमिन बन्दे हमा वक़्त, हमा तन अपने नफ्स के तज़किये के लिये कोशां और अपने दामन के दाग-धब्बे धोने के बारे में फ़िक्रमंद रहते हैं।

आयत 5

"और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं।"

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حٰفِظُونَ ۝

आयत 6

"सिवाय अपनी बीवियों या लौंडियों के, तो ऐसे लोगों पर कोई मलामत नहीं।"

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝

उनका चौथा वस्फ़ ये बयान हुआ कि वह सिर्फ़ जायज़ तरीक़े से अपनी जिन्सी ख्वाहिश पूरी करते हैं और इसमें कुछ मज़ाएक़ा नहीं। यानि जिन्सी जज़्बा फ़ी नफ्सिही बुरा नहीं, बल्कि बुराई उसके गलत इस्तेमाल में है। इस्लाम के सिवा दूसरे मज़ाहिब में तजर्रुद की ज़िंदगी बसर करना और अपने जिन्सी जज़्बे को, जो फ़ितरत और जिबिल्लत में एक निहायत क़वी जज़्बा है, कुचलना एक आला तरीन रूहानी क़द्र क़रार दिया जाता है, जबकि इस्लाम दीने फ़ितरत है, चुनाँचे वह इस फ़ितरी व जिबिल्ली जज़्बे को बिल कुल्लिया कुचलने और दबाने को क़तअन पसंद नहीं करता। इसका मंशा व मदआ ये है कि इस जज़्बे की तस्कीन के लिये जायज़ और हलाल राहें इख़्तियार की जाएँ। निकाह को इसी लिये नबी अकरम ﷺ ने अपनी सुन्नतों में से एक सुन्नत क़रार दिया है। चुनाँचे यहाँ जिन्सी तस्कीन के जायज़ रास्तों के लिये "غَيْرُ مَلُومِينَ" का अस्लूब इख़्तियार किया गया है।

आयत 7

"तो जो कोई भी इसके अलावा कुछ चाहेगा तो ऐसे लोग ही हद से बढ़ने वाले हैं।"

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُونَ ۝

इस सिलसिले में जो कोई हलाल और जायज़ तरीक़े से हट कर कोई और रास्ता इख़्तियार करेगा वह गुनाह और ज़्यादती का मुरतकिब क़रार पाएगा।

आयत 8

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ 8

"और वो जो अपनी अमानतों और अपने अहद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं।"

इस आयत में दो वस्फ़ बयान हुए हैं। यानि पाँचवां वस्फ़ अमानतों की पासदा और छठा वस्फ़ ईफ़ा-ए-अहद।

आयत 9

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰي صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ 9

"और वो जो अपनी नमाज़ों की पूरी मुहाफ़ज़त करते हैं।"

यहाँ ये नुक्ता क़ाबिले तव्वजोह है कि इस मज़मून का आग़ाज़ भी नमाज़ के ज़िक्र से किया गया था और इसका इख्तताम भी नमाज़ के ज़िक्र पर किया जा रहा है। आयत 2 में कामयाब व बा-मुराद मोमिनीन की पहली सिफ्त ये बताई गई थी: {الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ} कि वह लोग अपनी नमाज़ों में ख़ुशूअ इख़्तियार करने वाले हैं। यानि इस मज़मून के आग़ाज़ में नमाज़ की बातिनी कैफ़ियत के हुस्न का ज़िक्र किया गया था, जबकि इख्तताम पर आयत ज़ेरे नज़र में नमाज़ के निज़ाम की बात की गई है कि सच्चे अहले ईमान नमाज़ पर मदावमत करते हैं और उसके तमाम आदाब व क़वानीन को कमा हक्क़ा मल्हूज़ रखते हैं।

आयत 10

اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ 10

"यही लोग हैं जो वारिस होंगे।"

आयत 11

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ 11

"वह वारिस होंगे ठंडी छाँव वाले बागात के, उसमें वह हमेशा-हमेश रहेंगे।"

اللهم ربنا اجعلنا منهم۔ اللهم ربنا اجعلنا منهم۔

आयात 12 से 22 तक

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ 12 ۚ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ 13 ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا
الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۤ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۭ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ 14 ۭ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ 15 ۭ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ 16 وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَاۗىِٕقَ ڰ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ 17 وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ
ڰ وَاِنَّا عَلٰي ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ 18 ۚ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ 19 ۙ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ
طُوْرِ سَيْنَاۗءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ 20 وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ 21 ۙ
وَعَلَيْهَا وَعَلَي الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ 22

अब जो मज़मून आ रहा है वह इससे पहले सूरतुल हज की आयत 5 में भी आ चुका है, मगर वहाँ इख्तसार के साथ आया था, जबकि यहाँ ज़्यादा वज़ाहत और जामियत के साथ आया है। इससे सूरतुल हज के साथ इस सूरत की मुशाबेहत का पहलु भी नज़र आता है।

आयत 12

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ 12ۚ

"हमने पैदा किया इंसान को मिट्टी के ख़लासे से।"

तलवार को नियाम से बाहर खींचने के अमल को "सल्ला-यसुल्लू" जबकि नियाम से बाहर निकली हुई नंगी तलवार को "मस्लूल" कहा जाता है। किसी भी चीज़ का असल जोहर जो उसमें से कशीद किया गया हो "सुलाला" कहलाता है। चुनाँचे इस आयत का एक मफ़हूम तो यह है कि हज़रत आदम अलै. को बराहेरास्त मिट्टी के जोहर से तख़्लीक़ किया गया और फिर पूरी नस्ले इंसानी चूँकि उनकी औलाद थी इसलिये अपनी तख़्लीक़ के हवाले से हर इंसान को गोया इसी माद्दा-ए-तख़्लीक़ यानि मिट्टी से निस्बत ठहरी। लेकिन मेरे नज़दीक़ इस की ज़्यादा सही ताबीर यह है कि मर्द के जिस्म में बनने वाला नुत्फ़ा दरअसल मिट्टी से कशीद किया हुआ जोहर है। इसलिये कि इंसान को खुराक तो मिट्टी ही से हासिल होती है, चाहे वह मअदनियात और नबातात की शक्ल में उसे बराहेरास्त ज़मीन से मिले या नबातात पर पलने वाले जानवरों से हासिल हो। इस खुराक की सूरत में गारे और मिट्टी के जोहर कशीद होकर इंसानी जिस्म में जाते हैं और इससे वह नुत्फ़ा बनता है जिससे बिल आखिर बच्चे की तख़्लीक़ मुम्किन होती है।

आयत 13

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝13

"फिर हमने उसे बूंद की शक्ल में एक महफ़ूज़ ठिकाने में रखा।"

रहम (uterus) को एक महफ़ूज़ ठिकाना क़रार दिया गया है, जिसकी दीवार बहुत मज़बूत होती है। नुत्फ़ा रहमे मादर में पहुँचता है और बैज़ा-ए-अंसी के साथ मिल कर fertilized ovum रहम की दीवार के अन्दर embed हो जाता है, गोया दफ़न हो जाता है जैसे बीज ज़मीन के अंदर दफ़न हो जाता है।

आयत 14

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

"फिर हमने उस नुत्फ़े को अ'लक़ा की शक्ल दे दी"

अ'लक़ा का तर्जुमा आमतौर पर "जमा हुआ खून" होता आया है जो कि गलत है। लुग्वी एतेबार से अरबी माद्दा अलक़ (ع ل ق) से मौअल्लक़, ताल्लुक़, मुताल्लिक़, इलाक़ा वगैरह अल्फ़ाज़ तो मुश्तक़ हैं लेकिन इस लफ्ज़ का जमे हुए खून के मफ़हूम व मायने के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं। दरअसल जिस ज़माने में ये तराजिम हुए हैं उसमें ना तो dissection का कोई तस्सवुर था और ना ही अभी माइक्रोस्कोप ईजाद हुई थी, लिहाज़ा इल्मुल जनीन के बारे में तमामतर मालूमात की बुनियाद ज़ाहिरी मुशाहिदे पर थी। और चूँकि इब्तदाई अय्याम का हमल गिरने की सूरत में रहम से बज़ाहिर खून के लोथड़े ही बरामद होते थे, इसलिये इससे यही समझा गया कि रहमे मादर में इंसानी तखलीक़ की इब्तदाई शक्ल जमे हुए खून के लोथड़े की सी होती है। आज जब हम जनीनियात (Embryology) के बारे में जदीद साइन्सी मालूमात की रौशनी में लफ्ज़ "अ'लक़ा" पर गौर करते हैं तो इसका

मफ़हूम बिल्कुल वाज़ेह हो जाता है। जदीद साइन्सी मालूमात के मुताबिक़ fertilized ovum इब्तदाई मरहले में रहम की दीवार के अंदर जमा हुआ (embeded) होता है, जबकि अगले मरहले में वह इससे उभर कर, bulge out करके दीवार के साथ जोंक की तरह लटकने लग जाता है। और यही दरअसल "अ'लक़ा" है।

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً

"फिर अ'लक़ा को हमने गोश्त का लोथड़ा बना दिया"

फिर अगले मरहले में ये "अ'लक़ा" गोश्त के एक नीम चबाए हुए लोथड़े की शक्ल इख़्तियार कर लेता है। बल्कि डाक्टर कीथ एल मूर (मौसूफ़ दौरे हाज़िर में इल्मुल जनीन पर सनद का दर्जा रखते हैं। इस हवाले से उनका ज़िक्र बयानुल क़ुरान के हिस्सा अव्वल, तआरुफ़े क़ुरान के बाब पन्जम में भी आ चुका है) के बारे में बताया जाता है कि उन्होंने इसकी वज़ाहत के लिये कच्चे गोश्त का एक टुकड़ा लिया और वाक़िअतन उसे दाँतों से चबा कर दिखाया कि दाँतों के निशान पड़ जाने से इस गोश्त के टुकड़े की जो शक्ल बनी है बैन ही वही शक्ल इस मरहले में "مُضْغَةً" की होती है।

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا

"पस हमने गोश्त के उस लोथड़े के अंदर हड्डियाँ पैदा कीं, फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया"

और इसके बाद "सुम्मा" के साथ चौथे और आख़री दौर का ज़िक्र है:

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ

"फिर हमने उसे एक और ही तख़्लीक़ पर उठा दिया।"

आयत के इस हिस्से में मायने का एक जहान आबाद है, मगर इसे बहुत कम लोगों ने समझा है। आम लोग क़ुरान की ऐसी बहुत सी आयात को पढ़ते हुए बेखबरी से यूँ आगे गुज़र जाते हैं जैसे इनमें कोई ख़ास बात ना हो, मगर जिस पर हक़ीक़त मुन्कशिफ़ होती है उसे कलामुल्लाह के एक-एक हर्फ़ के अंदर क़यामत मुज़मर दिखाई देती है। कितने ही मुफ्फ़सरीन हैं जो सूरतुल हदीद की तीसरी आयत { هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ } की तफ़सीर किये बगैर आगे गुज़र गए हैं, लेकिन इमाम राज़ी रह. जब इसे पढ़ते हैं तो उनकी नज़र किसी और ही जहान का नज़ारा करती है, इसका इज़हार वह इस तरह करते हैं: اِعْلَمْ اَنَّ هٰذَا الْمَقَامَ مَقَامٌ غَامِضٌ عَمِيْقٌ مُهِيْبٌ (जान लो कि ये मक़ाम बहुत मुश्किल, बहुत गहरा और बहुत पुर हैबत है!) ये क़ुरान का मौज्ज़ाती पहलु है और इसका ताल्लुक़ देखने वाली आँख से है। बहरहाल इन आयात को फिर से पढ़िये और तख़्लीक़ के मराहिल में "फ़" और "सुम्मा" के नाज़ुक फ़र्क़ को समझने की कोशिश कीजिये। ग़ौर कीजिये! यहाँ "सुम्मा" का वक़्फ़ा एक पूरे दौर को ज़ाहिर करता है, जबकि तख्लीक़ी अमल के अंदरूनी मराहिल के बयान को "फ़" से अलग किया गया है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ

यानि मिट्टी के जोहर से नुत्फ़े की तख़्लीक़ एक मुकम्मल दौर है।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ

ये दूसरा दौर है। यानि नुत्फ़े का क़रारे मकीन में पहुँच कर एक बीज की हैसियत से दफ़न हो जाना।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

ये तीसरे दौर का ज़िक्र है और इस दौर के अंदर तीन मराहिल हैं, हर मरहले के ज़िक्र के साथ "फ़" का इस्तेमाल हुआ है:

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا

इसके बाद "सुम्मा" के साथ चौथे और आख़री दौर का ज़िक्र है:

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ

"फिर हमने उसे एक और दूसरी मख्लूक़ बना कर खड़ा किया।" यानि अब यह एक बिल्कुल नई मख्लूक़ है। यहाँ "बिल्कुल नई मख्लूक़" से क्या मुराद है? इसकी तफ़सील उस हदीस में मिलती है जिसके रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि. हैं। यह हदीस सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में बा-अल्फ़ाज़ नक़ल हुई है:

اِنَّ اَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهٗ فِيْ بَطْنِ اُمِّهٖ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا نُطْفَةً، ثُمَّ يَكُوْنُ عَلَقَةً مِّثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ يَكُوْنُ مُضْغَةً مِّثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ يُرْسَلُ اِلَيْهِ الْمَلَكُ فَيَنْفُخُ فِيْهِ الرُّوْحَ-----

> "तुम में से हर एक की तख़्लीक़ यूँ होती है कि वह अपनी माँ के पेट में चालीस यौम तक नुत्फ़े की सूरत में, इसके बाद इतने ही रोज़ तक अ'लक़ा की सूरत में, और इसके बाद इतने ही रोज़ गोश्त के लोथड़े की सूरत में रहता है। बाद अज़ा उसकी तरफ़ एक फ़रिशता भेजा जाता है, पस वह उसमें रूह फूँकता है....."(9)

यानि चालीस दिन तक नुत्फ़ा, फिर चालीस दिन तक अ'लक़ा और इसके बाद चालीस दिन तक मुदगता, एक सौ बीस दिन (चार माह) में ये तीन मराहिल मुकम्मल होने के बाद अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजते हैं। वह कोल्ड स्टोरेज (आलमे अरवाह) से उसकी रूह को लाकर इस माद्दी जिस्म के साथ मिला देता है और यूँ एक नई मख्लूक़ वजूद में आ जाती है। यानि अब तक वह एक हैवानी जिस्म था, लेकिन इस रूह के फूँके जाने के बाद वह इंसान बन गया। अलबत्ता इस हदीस के मफ़हूम को समझने में भी लोगों से गलती हुई है। आमतौर पर यही समझा गया है कि एक सौ बीस दिन के बाद इस जिस्म में जान डाल दी जाती है। यानि रूह को "जान" (life) समझा गया है। गोया चार माह तक तख्लीक़ी मराहिल से गुज़रता हुआ ये वजूद बेजान था? जबकि हक़ीक़त यह है कि ज़िंदगी या जान इसमें पहले दिन से ही मौजूद थी। हत्ता कि बाप के नुत्फ़े का खलिया (spermatozoon) और माँ का बैज़ा (ovum) भी अपनी-अपनी जगह पर ज़िन्दा वजूद हैं और इन दोनों के इख्तलात से वजूद में आने वाला ज़फ्ता (zygote) भी। बहरहाल एक सौ बीस दिन के बाद इस जसद-ए-हैवानी में "रूह" फूँकी जाती है, जो एक नूरानी चीज़ है और वही इसे हैवान से इन्सान बनाती है। और इसी तब्दीली या तख्लीक़ी मरहले को आयत ज़ेरे नज़र में "خَلْقًا اٰخَرَ ؕ"(एक नई तख्लीक़) से ताबीर किया गया है।

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ؕ —14

"पस बड़ा बा-बरकत है अल्लाह, तमाम तख्लीक़ करने वालों में बेहतरीन तख्लीक़ करने वाला।"

आयत 15

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۗ ؁15

"फिर इसके बाद तुम लोग यक़ीनन मरने वाले हो।"

आयत 16

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ؁16

"फिर क़यामत के दिन तुम लोग यक़ीनन उठा दिये जाओगे।"

ये गोया हयात-ए-इंसानी के मुख्तलिफ़ मराहिल का बेहतरीन और जामे तरीन बयान है, जो इन आयात में हुआ है। इस मौज़ू पर यह क़ुरान हकीम का ज़रवा-ए-सनाम (climax) है।

आयत 17

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَاۗىِٕقَ ڰ

"और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए हैं"

आमतौर पर "سَبْعَ طَرَاۗىِٕقَ" से सात आसमान मुराद लिये जाते हैं। "طَرَاۗىِٕقَ" के मायने रास्तों के भी हैं। दूसरे मायने के मुताबिक़ इससे "तह-ब-तह सात आसमान" मुराद हैं। वल्लाह आलम! जब तक इंसानी इल्म की रसाई इसकी हक़ीक़त तक ना हो जाए, इसके बारे में यक़ीन से कुछ नहीं कहा जा सकता। इस लिहाज़ से यह आयत मुतशाबेहात में से होगी।

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ؁17

"और हम अपनी मख्लूक़ से ग़ाफिल नहीं हैं।"

आयत 18

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ

"और हमने आसमान से पानी उतारा एक अंदाज़े के मुताबिक़"

ज़मीन पर पानी इसी मिक़दार में रखा गया है जिस क़दर वाक़िअतन यहाँ इसकी ज़रूरत है। अगर इस मिक़दार से पानी ज़्यादा हो जाए तो रुए ज़मीन सैलाब में डूब जाए और पूरी नौए इंसानी इसमें गर्क़ हो जाए। और अगर इस मिक़दार से कम हो तो ज़मीन पर ज़िंदगी का वजूद ही मुमकिन ना रहे।

فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ڰ وَاِنَّا عَلٰي ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ؀18

"तो इसे हमने ज़मीन में ठहरा दिया और हम इसको वापस ले जाने पर भी क़ादिर हैं।"

अगर हम चाहें तो रुए अरज़ी से पानी का वजूद ख़त्म कर दें और यूँ दुनिया में ज़िंदगी की बुनियाद ही ख़त्म हो जाए।

आयत 19

فَأَنشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ

"तो हमने उससे पैदा किये तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों के बाग़ात"

لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿19﴾

"उनमें तुम्हारे लिये बहुत से फ़ल हैं और उनमें से तुम खाते हो।"

उनमें से अक्सर फ़ल तुम्हारे लिये गिज़ा का काम देते हैं।

आयत 20

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِن طُورِ سَيْنَاءَ

"और वह दरख़्त भी (हमने पैदा किया) जो सीना पहाड़ से निकलता है"

इससे जैतून का दरख़्त मुराद है जो आमतौर पर जज़ीरा नुमाए सीना के पहाड़ी इलाक़ों में ब-कसरत पाया जाता है।

تَنۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ﴿20﴾

"वह तेल भी लेकर उगता है और खाने वालों के लिये सालन भी।"

एक ज़माने में रुए ज़मीन पर वसीअ इलाक़े की आबादी का अपनी ख़ुराक के लिये बुनियादी तौर पर इसी ज़ैतून पर ही इन्हसार था और आम लोग रोगन ज़ैतून में रोटी को भिगो कर खा लेते थे।

आयत 21

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً

"और यक़ीनन तुम्हारे लिये इन चौपायों में भी इबरत का सामान है"

अगर तुम समझना चाहो तो इनमें तुम्हारी हिदायत के लिये बहुत वाज़ेह निशानियाँ हैं।

نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا

"हम पिलाते हैं तुम्हें उसमें से जो इनके पेटों में है"

सूरह नहल (आयत66) में इस अजूबा-ए-क़ुदरत का ज़िक्र इस तरह किया गया है: {وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ} "और यक़ीनन तुम्हारे लिये चौपायों में भी इबरत है, हम पिलाते हैं तुम्हें उसमें से जो उनके पेटों में होता है, गोबर और खून के दरमियान से ख़ालिस दूध, पीने वालों के लिये निहायत खुशगवार।" अगर हम गाए या भैंस का पेट चाक करके देखें तो उसके अंदर हमे गोबर और खून ही नज़र आएगा। यह अल्लाह की क़ुदरत है कि इन्ही आलाइशों के अंदर से साफ़ शफ्फ़ाफ़ दूध पैदा होता है जो इंसानों के लिये बहुत बड़ी नेअमत है। जब अल्लाह तआला की इस नेअमत और क़ुदरत पर गौर करें तो बच्चों की नज़्म के ये अशआर बे-इख़्तियार ज़बान पर आ जाते हैं:

रब का शुक्र अदा कर भाई, जिसने हमारी गाय बनाई
उस खालिक़ को क्यों ना पुकारे, जिसने पिलाई दूध की धारें

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ؁21

“और तुम्हारे लिये इनमें बहुत से फ़वाइद हैं और इनमें से बाज़ को तुम खाते भी हो।”

ये चौपाय बहुत से कामों में तुम्हारी मदद करते हैं। तुम्हारे साज़ो-सामान की नक़ल व हमल में तुम्हारे काम आते हैं और तुम अपनी गिज़ा में प्रोटीन भी इन्हीं के गोश्त से हासिल करते हो।

आयत 22

وَعَلَيْهَا وَعَلَي الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ؁22

“और इन (चौपायों) पर और कश्तियों पर भी तुम सवार किये जाते हो।”

चुनाँचे इन सब चीज़ों और नेअमतों में तुम्हारे लिये अल्लाह तआला की क़ुदरत की निशानियाँ हैं।

आयात 23 से 50 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ؁23 فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً ښ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَاۗىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ ؀24 اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى
حِيْنٍ ؁25 قَالَ رَبِّ انْــصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ؁26 فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَاۗءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ؁27 فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَي
الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ؁28 وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ؁29 اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا
لَمُبْتَلِيْنَ ؁30 ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ؀31 فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ؀32 وَقَالَ
الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ
؀33ڮ وَلَىِٕنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ؀34 اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْـرَجُوْنَ ؀35ڮ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوْعَدُوْنَ ؀36ڮ اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ؀37ڮ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُۨ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ
؀38 قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ؀39 قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ؀40 فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَاۗءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ؀41 ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ؀42 مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ؀43 ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَاۗءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ؀44 ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ڏ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
؀45 اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ؀46 فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ؀47 فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ
الْمُهْلَكِيْنَ ؀48 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ؀49 وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۧ50

आयत 23

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ

“और हमने भेजा नूह को उसकी क़ौम की तरफ़, तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो! तुम्हारा कोई इलाह नहीं है उसके सिवा।”

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ؁23

“तो क्या तुम (उसके गज़ब से) डरते नहीं हो?”

आयत 24

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ

“तो कहा उसकी क़ौम के उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की थी, यह कुछ भी नहीं मगर तुम्हारी तरह का एक बशर”

हज़रत नूह अलै. की क़ौम के बड़े-बड़े सरदारों ने अपने अवाम को तसल्ली देने के लिये उनके सामने यह दलील इख़्तियार की कि यह नूह भी तुम्हारी

तरह का एक इंसान ही तो है और एक इंसान अल्लाह का फ़रस्तादाह कैसे हो सकता है?

يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ

"यह तुम्हारे ऊपर अपनी फ़ौक़ियत चाहता है।"

इसने इक़तदार व इख़्तियार और सरदारी हासिल करने के लिये नबूवत व रिसालत का यह ढोंग रचाया है।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖ

"और अगर अल्लाह चाहता तो फरिश्तों को भेज देता"

अगर अल्लाह ने अपना रसूल भेजना होता तो वह अपने फरिश्तों में से किसी को भेजता। इस शख्स में कौन सी ऐसी ख़ास बात थी कि अल्लाह ने इसे इस काम के लिये मुन्तखिब किया है?

مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۚ—24

"हमने इस तरह कोई बात अपने पहले आबा व अजदाद में नहीं सुनी!"

इसका यह दावा बिल्कुल नया है। हमने ऐसी कोई बात अपने बाप-दादा से तो नहीं सुनी कि अल्लाह तआला इन्सानों में से भी किसी को रसूल मबऊस करता है।

आयत 25

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ —25

"यह तो बस एक ऐसा शख्स है जिसको कुछ जुनून लाहक़ हो गया है, चुनाँचे तुम लोग इंतेज़ार करो इस (के अंजाम) का कुछ वक़्त के लिये।"

आयत 26

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ —26

"नूह अलै. ने अर्ज़ किया: ऐ मेरे परवरदिगार! तू मेरी मदद फ़रमा इस पर कि इन्होंने मुझे झुठला दिया है।"

आयत 27

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

"तो हमने उसकी तरफ़ वही की कि हमारी निगरानी और वही की हिदायत के मुताबिक़ एक कश्ती बनाइये"

فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ

"फिर जब हमारा हुक्म आँ पहुँचे और तन्नूर उबल पडे"

"तो उसमें रख लेना तमाम मख्लूक़ में से जोड़े"

فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

हर क़िस्म के जानदार, हैवानात वगैरह में से एक-एक नर और एक-एक मादा को भी उस कश्ती में सवार कर लेना ताकि उनकी नस्ल महफ़ूज़ रह सके।

"और अपने घरवालों को भी (सवार कर लेना) सिवाय उनके जिनके बारे में उनमें से पहले ही बात तय हो चुकी है।"

وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ

इस इस्तशना में आपकी बीवी और एक बेटा शामिल थे, जिनके बारे में पहले ही हलाकत का फ़ैसला हो चुका था।

"और मुझसे उन लोगों के बारे में कोई बात ना करना जिन्होंने शिर्क किया, यक़ीनन वह सब ग़र्क़ कर दिये जाएँगे।"

وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ــ27

आयत 28

"फिर जब तुम और तुम्हारे सब साथी कश्ती में बैठ जाएँ तो कहना कि कुल शुक्र उस अल्लाह का है जिसने हमें ज़ालिम क़ौम से निजात दी।"

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ــ28

وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا

आयत 29

"और दुआ करना कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे उतारियो बरकत वाला उतारना"

परवरदिगार! हम तेरी मेहरबानी और तेरे हुक्म से इस कश्ती में सवार हुए हैं। हमें मुस्तक़बिल का कुछ इल्म नहीं। हम नहीं जानते अब ये कश्ती हमें लेकर कहाँ-कहाँ जाएगी और कहाँ पर जाकर रुकेगी। ये मामला अब तेरे सुपुर्द है। हमारी इल्तजा है कि इस कश्ती से हमारे उतरने को भी बा-बरकत बना दे।

"और यक़ीनन तू ही है बेहतरीन उतारने वाला।"

وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ــ29

आयत 30

"यक़ीनन इसमें बड़ी निशानियाँ हैं और यक़ीनन हम आज़माने वाले हैं।"

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ــ30

अल्लाह तआला अपनी मशीयत के तहत दुनिया में मुख्तलिफ़ लोगों को मुख्तलिफ़ अंदाज़ में आज़माते रहते हैं। इस असूल और क़ानून के बारे में सूरह मुल्क के आगाज़ में यूँ इर्शाद हुआ है: {الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا} (आयत 2) “वही (अल्लाह) है जिसने मौत और हयात को बनाया ही इसलिये है कि तुम्हें परखे कि तुम में से अमल के लिहाज़ से बेहतरीन कौन है!”

आयत 31

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۚ؀31

“फिर उनके बाद हमने एक और नस्ल को उठाया।”

इससे मुराद क़ौमे आद या क़ौमे समूद है।

आयत 32

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ

“पस उनमें भी हमने एक रसूल भेजा उन्हीं में से”

यहाँ पर नाम नहीं बताया गया लेकिन क़रीने क़यास यही है कि यह हज़रत हूद अलै. का तज़किरा है या फ़िर हज़रत सालेह अलै. का।

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ؀32

“(उसने भी यही कहा) कि बंदगी करो अल्लाह की उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं, तो क्या तुम लोग डरते नहीं हो?”

आयत 33

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ الْاٰخِرَةِ

“और कहा उसकी क़ौम के उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र किया था और आख़िरत की मुलाक़ात का इंकार किया था”

وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ

“और जिन्हें हमने आसूदगी अता की थी दुनिया की ज़िंदगी में”

क़ौमे नूह के सरदारों की तरह इस क़ौम के बड़े-बड़े सरदारों ने भी अपने अवाम को इसी मन्तिक़ से मुत्मईन करने की कोशिश की कि:

مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ؀33ڮ

“यह कुछ भी नहीं मगर तुम्हारी तरह का एक बशर, वही कुछ खाता है जो तुम खाते हो, और वही कुछ पीता है जो तुम पीते हो।”

आयत 34

وَلَٮِٕنۡ اَطَعۡتُمۡ بَشَرًا مِّثۡلَكُمۡ ۙ اِنَّكُمۡ اِذًا لَّخٰسِرُوۡنَ ۙ—34

"और अगर तुम लोग अपने ही जैसे एक इंसान की इताअत करोगे तब तो तुम बड़ा नुक़सान उठाने वाले हो जाओगे।"

ज़रा उन सरदारों की मन्तिक़ और दलील मुलाहेज़ा हो। यानि अगर तुम लोग हमारी इताअत करो तो दुरुस्त और बजा, लेकिन इस शख्स का कहना मानो तो ना-क़ाबिले क़ुबूल! इसलिये कि हम पैदाइशी सरदार हैं, तुम्हारे हुक्मरान हैं, हमारा हुक्म तो तुम्हें मानना ही मानना है। हमारी इताअत तो तुम पर लाज़िम है ही, मगर इस शख्स की इताअत इसलिये नहीं हो सकती कि यह तुम्हारी तरह का इंसान है। यह दलील देते हुए वह भूल गए कि वह खुद कोई फ़रिश्ते नहीं बल्कि अपने अवाम जैसे ही इंसान हैं और इंसान होते हुए ही वह अपने जैसे इंसानों से इताअत और फ़रमाबरदारी की तवक्क़ो रखते हैं।

आयत 35

اَيَعِدُكُمۡ اَنَّكُمۡ اِذَا مِتُّمۡ وَكُنۡتُمۡ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمۡ مُّخۡرَجُوۡنَ ۙ—35ۛ

"क्या वह तुमसे ये वादा करता है कि जब तुम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम (फिर से) निकाल लिये जाओगे?"

आयत 36

هَيۡهَاتَ هَيۡهَاتَ لِمَا تُوۡعَدُوۡنَ ۙ—36ۛ

"नामुमकिन! बिल्कुल नामुमकिन है यह बात, जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है!"

आयत 37

اِنۡ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنۡيَا نَمُوۡتُ وَنَحۡيَا وَمَا نَحۡنُ بِمَبۡعُوۡثِيۡنَ ۙ—37ۛ

"यह कुछ नहीं है मगर बस हमारी दुनिया की ज़िंदगी (ही असल ज़िंदगी) है, हम खुद ही मरते हैं और खुद ही ज़िन्दा रहते हैं, और हम (दोबारा) उठाए जाने वाले नहीं हैं।"

आयत 38

اِنۡ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

"यह नहीं है मगर एक ऐसा शख्स जिसने झूठ बाँधा है अल्लाह पर"

इसने अपनी नबूवत व रिसालत के बारे में झूठ गढ़ कर अल्लाह से मंसूब कर दिया है।

وَّمَا نَحۡنُ لَهٗ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ۙ—38

"और हम इसकी बात मानने वाले नहीं हैं।"

आयत 39

"उस (रसूल) ने कहा: परवरदिगार! तू मेरी मदद फ़रमा इस तकज़ीब के मुक़ाबले में जो इन्होंने मेरी की है।"

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ــ39

आयत 40

"अल्लाह ने फ़रमाया कि कुछ ही देर में ये लाज़िमन हो जाएँगे पछताने वाले।"

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۚ ــ40

आयत 41

"और उनको आ पकड़ा एक चिंघाड़ ने हक़ साथ, तो हमने बना दिया उन्हें कूड़ा-करकट।"

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ

जैसे खेत से फ़सल कट जाने के बाद पीछे भूसा और खस व खाशाक पड़े रह जाते हैं इसी तरह उन्हें झाड़-झंकाड़ और कूड़े-करकट में तब्दील कर दिया गया।

"तो फटकार है उन ज़ालिमों की क़ौम पर।"

فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ــ41

आयत 42

"फ़िर उनके बाद हमने और बहुत सी क़ौमें पैदा कीं।"

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۚ ــ42

आयत 43

"कोई क़ौम भी ना अपने मुक़र्ररा वक़्त से आगे बढ़ सकी और ना ही उसे मौअख्खर कर सकी।"

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ــ43

आयत 44

"फिर भेजा हमने अपने रसूलों को पे-दर-पे।"

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا ۚ

"जब भी किसी क़ौम के पास आया उसका रसूल तो उन्होंने उसे झूठलाया, तो हमने भी एक के पीछे दूसरी को लगा दिया"

كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

उनकी तकज़ीब के जवाब में हम भी उन क़ौमों को यके बाद दीगरे (एक के बाद दूसरी को) हलाक करते चले गए।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ

"और हमने बना दिया उनको क़िस्से-कहानियाँ।"

उन क़ौमों के नाम अब दुनिया में कहानियों और दास्तानों की हद तक बाक़ी रह गए हैं कि क़ौमे मदयन फ़लाँ इलाक़े में बसती थी, आमूराह और सदुम के शहर फ़लाँ जगह पर वाक़ेअ थे, वगैरह-वगैरह।

فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ـــ44

"तो फटकार है उस क़ौम पर कि जो ईमान नहीं लाती।"

आयत 45

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙــ45

"फिर हमने भेजा मूसा और उसके भाई को अपनी निशानियों और रौशन सनद के साथ।"

आयत 46

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ۚــ46

"फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह बड़े सरकश लोग थे।"

आयत 47

فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ۚــ47

"उन्होंने कहा कि क्या हम अपने जैसे दो इन्सानों पर ईमान लाएँ जबकि इनकी क़ौम हमारी महकूम है!"

फ़िरऔन और उसके दरबारियों ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै. पर एक ऐतराज़ तो वही किया जो हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै. की क़ौमें अपने रसूलों के बारे में कर चुकी थीं। यानि यह कि वह हमारी तरह के इंसान हैं। लेकिन यहाँ एक दूसरा मसला भी था और वह यह कि हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै. का ताल्लुक़ फ़िरऔन की महकूम क़ौम से था। बनी इसराइल मिस्र फ़िरऔन के गुलाम थे और वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था कि उसकी गुलाम क़ौम के दो अश्खास उसके सामने खड़े होकर उससे दू-ब-दू बात करें।

स्याक़ व सबाक़ के हवाले से यहाँ पर लफ्ज़ "इबादत" के असल मफ़हूम को भी समझ लें। ज़ाहिर है कि इस लफ्ज़ का जो मफ़हूम आज हमारे ज़हनों में है बनी इसराइल इस मफ़हूम में फ़िरऔन या उसकी क़ौम की इबादत नहीं करते थे, यानि वह उनकी परस्तिश या पूजा नहीं करते थे, बल्कि वह उनकी इताअत करते थे और यहाँ फ़िरऔन ने इसी इताअत को लफ्ज़ "इबादत" से ताबीर किया है। चुनाँचे फ़िरऔन के इस जुम्ले का मतलब यह है कि इनकी क़ौम हमारी गुलाम है, हमारी इताअत शआर है, हम इन पर मुतलक़ इख़्तियार रखते हैं, हम जो चाहें इन्हें हुक्म दें, और जैसा क़ानून हम चाहें

इन पर लागू करें। हम चाहें तो इनके लड़कों को क़त्ल करवाते रहें और चाहें तो इनकी बेटियों को ज़िन्दा रहने दिया करें। ये लोग हमारे गुलाम और महकूम होने के बाइस हमारे किसी हुक्म से सरताबी की जुर्रात नहीं कर सकते।

आयत 48

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝48

"तो उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया और हो गए हलाक होने वालों में से।"

आयत 49

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝49

"और हमने मूसा को किताब दी ताकि वह हिदायत पायें।"

आयत 50

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً

"और हमने इब्ने मरियम (ईसा) और उसकी वालिदा (मरियम) को एक निशानी बना दिया"

وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝50

"और हमने उन दोनों को एक ऊँचे टीले पर पनाह दी जो पुर सुकून और चश्मों वाली जगह थी।"

यहाँ जिस जगह का ज़िक्र हुआ है उसके मक़ाम और ज़माने के बारे में इख्तिलाफ़ है। इस बारे में एक राय तो ये है कि इससे मुराद वही टीला है जहाँ एक खजूर के दरख़्त के साये में हज़रत ईसा अलै. की विलादत हुई थी। शायद आपकी विलादत के बाद माँ-बेटा कुछ अरसा उसी जगह पर क़याम पज़ीर रहे हों। इसके बरअक्स कुछ लोगों की राय में ये किसी और जगह का ज़िक्र है। इस दूसरी राय की बुनियाद जिन मालूमात पर है उनके मुताबिक़ हज़रत ईसा अलै. की पैदाइश के वक़्त उस इलाक़े में हीरो डलीस बादशाह की हुकूमत थी जो यहूदी था। जिस तरह बर्रे सगीर में अंग्रेज़ों की तरफ़ से राजों और नवाबों को उनके इलाक़ों में हुक्मरान बना दिया जाता था इसी तरह रोमन शहंशाह ने उस इलाक़े में इस शख्स को बादशाह मुक़र्रर कर रखा था। इस कठपुतली बादशाह को एक ख्वाब आया था जिसकी बिना पर नजूमियों ने उसके दिल में ये वहम डाल दिया कि तुम्हारी सलतनत में एक ऐसा बच्चा पैदा होने वाला है जो बड़ा होकर तुम्हारी हलाकत का बाइस बनेगा। चुनाँचे उसने हुक्म दे रखा था कि उसकी सलतनत में जो लड़का भी पैदा हो, उसे क़त्ल कर दिया जाए। इन हालात में हज़रत मरियम, हज़रत ईसा को लेकर मिस्र चली गईं और इस यहूदी बादशाह के इन्तेक़ाल के बाद उस वक़्त वापस आईं जब हज़रत ईसा अलै. दस-बारह साल की उम्र को पहुँच चुके थे। इस वाक़िये का ज़िक्र बाईबल में भी है। चुनाँचे जो लोग इस

रिवायत को दुरुस्त समझते हैं उनका ख्याल है कि अपनी इस जिलावतनी के दौरान मिस्र में जिस जगह पर उन्होंने क़याम किया था आयत ज़ेरे नज़र में उस जगह का ज़िक्र किया गया है।

आयात 51 से 77 तक

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۭ 51 وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ 52 فَتَقَطَّعُوْٓا
اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ 53 فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ 54 اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ 55
نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ 56 اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ 57 وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ 58 وَالَّذِيْنَ
هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ 59 وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ 60 اُولٰۗىِٕكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ
61 وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ 62 بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ
هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ 63 حَتّٰٓي اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْــَٔــرُوْنَ ۭ 64 لَا تَجْــَٔــرُوا الْيَوْمَ ۣ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ 65 قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ
تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓي اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ 66 مُسْتَكْبِرِيْنَ ڰ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ 67 اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَاۗءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَاۗءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ
68 اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ 69 اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَاۗءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ 70 وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ
اَهْوَاۗءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۭ 71 اَمْ تَسْـَٔــلُهُمْ خَرْجًا فَخَــرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ڰ
وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ 72 وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ 73 وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ 74 وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ
وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّـلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ 75 وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ 76 هج اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ 77

आयत 51

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ

"ऐ रसूलों! पाकीज़ा और हलाल चीज़ों में से खाओ और नेक अमल करो।"

اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۭ 51

"जो कुछ तुम करते हो यक़ीनन मैं उससे बाख़बर हूँ।"

आयत 52

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً

"और यक़ीनन ये तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है"

तमाम पैगम्बरों का ताल्लुक़ एक ही उम्मत या जमात से है। बाज़ रिवायात के मुताबिक़ अम्बिया व रुसुल अलै. की तादाद एक लाख़ चौबीस हज़ार है। इनमें से तीन सौ तेरह रसूल हैं और बाक़ी अम्बिया। इन अम्बिया व रुसुल में से बाज़ का ज़िक्र क़ुरान में भी आया है जबकि अक्सर का ज़िक्र क़ुरान में नहीं है। सूरतुन्निसा की आयत 164 में इस बारे में यूँ वज़ाहत फ़रमाई गई है: { وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ } "और (भेजे) वह रसूल जिनका हम इससे पहले आपके सामने तज़किरा कर चुके हैं, और ऐसे रसूल भी जिनके हालात हमने आपके सामने बयान नहीं किये।"

وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ 52

"और मैं तुम्हारा रब हूँ, बस तुम मेरा ही तक़वा इख़्तियार करो!"

आयत 53

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ

"लेकिन लोगों ने अपने मामले को अपने माबैन तक़सीम कर लिया टुकड़े करके।"

अम्र से यहाँ मुराद "दीन" है। यानि उन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, और वह यहूदियत, ईसाईयत वगैरह नामों पर मुख्तलिफ़ गिरोहों में बट गए।

كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ــ53

"हर गिरोह के लोग जो कुछ उनके पास है इस पर इतरा रहे हैं।"

आयत 54

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ــ54

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आप इन्हें छोड़ दीजिये इनकी मदहोशी में, एक वक़्त तक के लिये।"

आयत 55

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۙ ــ55

"क्या वह समझते हैं कि हम जो उन्हें माल और बेटों से मदद दिये जा रहे हैं।"

आयत 56

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ــ56

"तो हम उनकी भलाई के लिये कोशां हैं? (ऐसा हरगिज़ नहीं!) लेकिन ये लोग जानते नहीं।"

हमारी तरफ़ से अपने इन नाफ़रमानों को माल व औलाद जैसी नेअमतों से नवाज़ते चले जाना इनके साथ भलाई की अलामात नहीं है बल्कि यही चीज़ें इनके लिये मौजबे अज़ाब बन जाएँगी। सूरतुत्तौबा (आयत 55) में ये फ़लसफ़ा इस तरह बयान हुआ है:

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ــ55

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आपको इनके अमवाल और इनकी औलाद से ताज्जुब ना हो, अल्लाह तो चाहता है कि इन्हीं चीज़ों के ज़रिये से इन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अज़ाब दे, और इनकी जानें निकले इसी कुफ़्र की हालत में।" और सूरतुत्तौबा तौबा ही की आयत 85 में अल्फ़ाज़ के बहुत मामूली फ़र्क़ के साथ यही मज़मून फिर से दोहराया गया है।

आगे जो आयात आ रही हैं इनका अंदाज़ इस सूरत की इब्तदाई आयात से मुशाबेह है। सूरत के आग़ाज़ में अक्सर आयात अल्लाज़ीना या वल्लाज़ीना से शुरू होती हैं और इन आयात में भी अल्लाज़ीना और वल्लाज़ीना की तकरार है। गोया जो मज़मून आगाज़े सूरत में बयान हुआ था ये उसकी दूसरी क़िस्त है। वहाँ पर बंदा-ए-मोमिन की सीरत की तामीर और शख्सियत के इरतक़ाअ के लिये दरकार बुनियादी ख़ुसूसियात का ज़िक्र किया गया था जबकि यहाँ पर मतलूबा शख्सियत व किरदार की पुख्ता

(mature) ख़ुसूसियात की झलकियाँ दिखाई जा रही हैं, जिनमें ज़्यादातर बंदा-ए-मोमिन की बातिनी कैफ़ियात का तज़किरा है।

आयत 57

إِنَّ الَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ۙ﴿57﴾

"यक़ीनन वह लोग जो अपने रब के खौफ़ से लरज़ाँ व तरसाँ रहते हैं।"

आयत 58

وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۙ﴿58﴾

"और वह जो अपने रब की आयात पर पुख्ता ईमान रखते हैं।"

आयत 59

وَالَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۙ﴿59﴾

"और वह जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते।"

शिर्क के रद्द और अबताल के ज़िमन में क़ुरान हकीम में बहुत तकरार है। इसका मतलब ये है कि इस मामले को बार-बार समझने की ज़रूरत है। शिर्क की अहम और वाज़ेह सूरतों के बारे में तो सब जानते हैं और इज्तनाब भी करते हैं, लेकिन इसकी बहुत सी मख़फ़ी सूरतें भी हैं जो हर दौर में हर जगह पाई जाती हैं।[10] लिहाज़ा एक बंदा-ए-मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वह शिर्क की मोहलक बीमारी के बारे में अपने अंदर बारीक बीनी और वक़्त नज़री की ऐसी सलाहियत पैदा करले जिसका इज़हार इस शेर में किया गया है:

बहर रंगे कि ख्वाही जामा मी पोश
मन अंदाज़े क़दत रा मी शनासम!

(तू जिस अंदाज़ का चाहे लिबास ज़ेब तन कर ले, मैं तुझे तुम्हारे क़द के अंदाज़ से पहचान लेता हूँ।)

यानि शिर्क जब भी उसके सामने आए, वह जिस रूप और जिस भेस में भी हो वह उसको पहचान ले।

आयत 60

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۙ﴿60﴾

"और वह जो देते हैं (अल्लाह की राह में) तो जो कुछ देते हैं इस तरह देते हैं कि उनके दिल डरते रहते हैं कि वह अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।"

यानि अल्लाह की राह में वह हत्तल मक़दूर सदक़ा व खैरात करते रहते हैं, लेकिन इसके बावजूद वह हर वक़्त अल्लाह तआला से डरते भी रहते हैं। दूसरों की मदद करते हुए वह उन्हें कमतर और खुद को बरतर नहीं समझते, बल्कि उन्हें ये खदशा और अंदेशा लाहक़ होता है कि कहीं किसी कोताही, गलती या ख़ुलूस की कमी के बाइस उनका यह अमल अल्लाह के यहाँ रद्द ना कर दिया जाए।

आयत 61

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ــ61

"ये वह लोग हैं जो भलाइयों में कोशां हैं और उनके लिये सबक़त करने वाले हैं।"

ज़िंदगी में इनकी भाग-दौड़ नेकियों और भलाइयों के लिये होती है और इस मैदान में वह हमेशा दूसरों से आगे निकलने की कोशिश में लगे रहते हैं।

आयत 62

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا

"और हम नहीं ज़िम्मेदार ठहराएँगे किसी जान को मगर उसकी इस्तताअत के मुताबिक़"

यह मज़मून क़ुरान में मतअद्दिद बार आया है। मसलन सूरतुल बक़रह आयात 233 और 286, सूरतुल अनआम आयत 152, सूरतुल आराफ़ आयत 42, और सूरतुल तलाक़ आयत 7 में ये मज़मून मिलते-जुलते अल्फ़ाज़ के साथ दोहराया गया है।

وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ــ62

"और हमारे पास ऐसी किताब है जो हक़ के साथ बोलती है, लिहाज़ा इन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

इससे मुराद हर शख्स का आमाल नामा और उसकी ज़िंदगी भर के आमाल व अफ़आल की जज़ियात व तफ़सीलात पर मुश्तमिल रिकॉर्ड है। इस अमाल नामे के मुताबिक़ इंसान की एक-एक हरकत और एक-एक अमल का उसकी इस्तताअत और सलाहियतों के मुताबिक़ जायज़ा लेकर उसके लिये जज़ा और सज़ा का फ़ैसला किया जागा। आज कंप्यूटर के दौर में इस तस्सवुर को समझना बहुत आसान हो गया है। चुनाँचे यूँ समझ लें कि इंसान ने जींस (genes) के बारे में तमाम मालूमात (जिबिल्ली सलाहियतों) और उसके माहौलयाती अवामिल की तफ़सीलात अल्लाह तआला के यहाँ एक सुपर कंप्यूटर में मौजूद हैं। माहौल और सलाहियतों की अता कुल्ली तौर पर अल्लाह की देन है, इसमें इंसान के अपने इख़्तियार व इन्तेखाब का कुछ दखल नहीं। जीन्ज़ और माहौलयाती अवामिल वगैरह मिल कर इंसान का "शाकला" तश्कील देते हैं। (शाकला की तफ़सील के लिये मुलाहिज़ा हो: बयानुल क़ुरान हिस्सा चाहरम में बनी इसराइल आयत 84 की तशरीह)। अल्लाह तआला का सुपर कंप्यूटर हर शख्स के आमाल को उसकी शख्सियत के शाकला के साथ मुन्तबिक़ करके बताएगा कि उसके शाकला में किस अमल के लिये कितनी इस्तताअत और गुंजाइश थी और उसने किस हद तक इसकी कोशिश की। इस हिसाब-किताब (evaluation) के बाद ये कंप्यूटर नताइज का ऐलान करेगा, जिसके लिये यहाँ "يَنطِقُ بِالْحَقِّ" के अल्फ़ाज़ आए हैं। सूरतुल कहफ़ में इस कैफ़ियत का नक़्शा इस तरह खींचा गया है:

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ــ49

"और रख दिया जाएगा आमाल नामा, चुनाँचे तुम देखोगे मुजरिमों को डरे हुए उससे जो कुछ उसमें होगा, और वह कहेंगे: हाय हमारी शामत! ये कैसा

आमाल नामा है? इसने तो ना किसी छोटी चीज़ को छोड़ा है और ना किसी बड़ी को, मगर इसको महफ़ूज़ करके रखा है, और जो अमल भी उन्होंने किया होगा वह उसे अपने सामने मौजूद पाएँगे, और आपका रब किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करेगा।"

आयत 63

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا

"लेकिन उनके दिल इससे गफ़लत में पड़े हुए हैं"

وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ــ63

"और उनके और बहुत से मशागुल हैं उनके सिवा जिनके लिये वह भाग-दौड़ कर रहे हैं।"

ऊपर अहले ईमान के जिन आमाल का तज़किरा किया गया है, उनके मशागुल और सरगर्मियाँ उनसे यक्सर मुख्तलिफ़ हैं। ऐसे लोगों के पास दीन की ख़िदमत और भलाई के कामों के लिये वक़्त ही नहीं है। उन्हें दिन-रात अपनी दुनिया कमाने की फ़िक्र है। वह अपने वक़्त का कुल सरमाया अपनी सारी तवानाइयों समेत खुद साख्ता झूठे मैयारात को बरक़रार रखने और ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाने के लिये खपा रहे हैं। इस आयत के मज़मून की रौशनी में हर शख्स को अपनी मसरूफ़ियात का जायज़ा लेना चाहिये कि उसकी शबाना रोज़ तगो-दो और भाग-दौड़ का कितना हिस्सा दीन के लिये है और कितना हिस्सा दुनिया के लिये। अगर किसी शख्स की तमामतर कोशिश और सारी मेहनत है ही दुनिया के लिये, उसका नस्बुल ऐन भी दुनिया है और उसने मंसूबा बंदी भी सिर्फ़ इसी के लिये कर रखी है तो उसे सोचना चाहिये कि आख़िरत की तैयारी करने के लिये फ़ुरसत के लम्हात उसे कब और कैसे मयस्सर आएँगे?

आयत 64

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْـَٔرُونَ ــ64

"यहाँ तक कि जब हम इनके खुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे तो उस वक़्त वह चीखें चिल्लाएँगे।"

आयत 65

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ــ65

"(इनसे कहा जाएगा) आज मत चीखो-चिल्लाओ! अब हमारे यहाँ से तुम्हारी कोई मदद नहीं की जाएगी।"

आज तुम्हारी इस चीख़ व पुकार और आह व फ़रियाद का कोई फ़ायदा नहीं होगा। तुम्हारी फ़रियाद सुन कर आज कोई तुम्हारी मदद को नहीं आएगा।

आयत 66

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ۙ—66

"मेरी आयात पढ़ कर तुम्हें सुनाई जाती थीं, तो तुम अपने एड़ियों के बल उलटे पलट जाते थे।"

आयत 67

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ —67

"तकब्बुर करते हुए, पैगम्बर को क़िस्सा गो समझते हुए छोड़ जाते थे।"

उस ज़माने में अरबों के यहाँ क़िस्सा गोई का बहुत रिवाज था। पेशावर क़िस्सा गो रातों को मजमा जमा कर क़िस्से सुनाया करते थे। ये आम लोगों के लिये तफ़रीह का ज़रिया था और क़िस्सा गो के लिये कमाई का वसीला। इसी तरह के क़िस्सा गो हिन्दुतान में राजपूतों के यहाँ भी पाए जाते थे जो उनके लिये रातों को महफ़िलें सजाते थे। चुनाँचे इस पसमंज़र में मुशरिकीने मक्का को मुखातब करके कहा जा रहा है कि क्या तुम लोगों ने हमारे रसूल ﷺ को भी क़िस्सा गो समझ रखा है कि आपकी बात सुनना या ना सुनना तुम्हारे लिये बराबर है? और तुम समझते हो कि आपकी बात मानने या ना मानने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा? तुम लोगों को मालूम होना चाहिये कि ये फ़ैसलाकुन कलाम है: {وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا} (बनी इसराइल:105) "और इस (क़ुरान) को हमने हक़ के साथ नाज़िल किया है और यह हक़ के साथ ही नाज़िल हुआ है, और (ऐ नबी ﷺ) नहीं भेजा हमने आपको मगर बशारत देने वाला और ख़बरदार करने वाला।" आइन्दा इसी कलाम के तराज़ू में क़ौमों की क़िस्मतें तौली जाएँगे, इसी के सहारे लोग कामयाब व कामरान होंगे और इसको छोड़ कर नाकामियों और महरूमियों के गड्ढों में गिरेंगे। इस सिलसिले में नबी मुकर्रम ﷺ का यह फ़रमान बहुत वाज़ेह और दो टूक है: ((اِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ اَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ))[11] "अल्लाह इसी किताब की बदौलत क़ौमों को उठाएगा और इसको (छोड़ने) के बाइस क़ौमों को गिराएगा।"

आयत 68

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَاۗءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَاۗءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۚ—68

"तो क्या इन लोगों ने इस कलाम पर गौर नहीं किया? या इनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गई है जो इनके अगले आबा व अजदाद के पास नहीं आई थी?"

तो क्या वही का नाज़िल होना और रसूल का मिन जानिब अल्लाह मबऊस होना इन्हें इसलिये अजीब लग रहा है कि इनके बाप-दादा यानि बनु इस्माइल पर इससे पहले कोई किताब नाज़िल नहीं हुई थी और ना ही उनकी तरफ़ इससे पहले कोई नबी आया था?

आयत 69

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ؁69

"क्या इन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, तो इसलिये वह इससे मगाएरत महसूस करते हैं!"

आयत 70

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ

"या वह कहते हैं कि इन पर कुछ जुनून का असर है!"

क्या वह समझते हैं कि आप पर आसेब का असर है या आपको जुनून हो गया है।

بَلْ جَاۗءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ؁70

"बल्कि वह तो इनके पास हक़ लेकर आए हैं, लेकिन इनकी अक्सरियत हक़ को नापसंद करने वाली है।"

आयत 71

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَاۗءَهُمْ لَـفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ

"और अगर हक़ इनकी ख्वाहिशात की पैरवी करता तो आसमान व ज़मीन और जो कोई इनके अन्दर हैं सब बिगड़ जाते।"

अगर हक़ कहीं इनकी ख्वाहिशात के पीछे चलता तो ज़मीन और आसमान और इनकी सारी आबादी का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाता। हक़ इन लोगों की ख्वाहिशात के मुताबिक़ नहीं ढल सकता, बल्कि इन्हें खुद को हक़ के मुताबिक़ ढालना होगा और इसकी पैरवी करना होगी।

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ؁71

"बल्कि हम तो इनके पास इनकी नसीहत लाए हैं तो वह अपनी ही नसीहत से ऐराज़ कर रहे हैं।"

आयत 72

اَمْ تَسْــَٔـلُهُمْ خَرْجًا فَخَــرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ڰ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ؁72

"क्या आप इनसे कोई खिराज़ (अज्र) माँग रहे हैं? तो आपके रब का अज्र बहुत बेहतर है और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है।"

दरअसल यहाँ इन अल्फ़ाज़ में ख़िताब हुज़ूर ﷺ से नहीं है बल्कि मुशरिकीने मक्का से है कि अक़्ल के अंधो, ज़रा सोचो तो! तुम्हारे शायर और क़िस्सा गो तो तुम लोगों से अज्र व ईनाम चाहते हैं। मगर तुमने मोहम्मद (ﷺ) की ज़बान से कभी ऐसी कोई बात सुनी है? कभी आपने अपनी इस ख़िदमत के एवज़ तुमसे कोई उजरत तलब की है? इनको तो इनके की तरफ़ से जो अज्र व ईनाम मिलने वाला है वह पूरी दुनिया के खज़ानों से बेहतर है।

आयत 73

وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ــ73

"और यक़ीनन आप इन्हें सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं।"

.

आयत 74

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ــ74

"और यक़ीनन जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वह इस रास्ते से इन्हराफ़ करते हैं।"

.

आयत 75

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ــ75

"और अगर हम उन पर रहम फ़रमाएँ और उनको जो तकलीफ़ है वह रफ़अ कर दें तो ज़रूर वह बढ़ते चले जाएँगे अपनी सरकशी में अंधे होकर।"

इन अल्फ़ाज़ से यूँ लगता है कि इस सूरत के नुज़ूल के ज़माने में अहले मक्का किसी मुसीबत में गिरफ़्तार थे। सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ में अल्लाह तआला की इस सुन्नत का ज़िक्र गुज़र चुका है जिसके तहत हर रसूल की बेअसत के बाद मुतअलक़ा क़ौम पर छोटे-छोटे अज़ाब भेजे जाते थे और उन्हें मुख्तलिफ़ क़िस्म की तकालीफ़ में मुब्तला किया जाता था ताकि वह ख्वाबे गफ़लत से जागें और उनके ज़हन हक़ की दावत पर ग़ौर व फ़िक्र करने के लिये तैयार हो जाएँ।

आयत 76

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

"और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा था"

इससे मुराद शायद क़हत और खुश्क साली का वह अज़ाब है जिसमें अहले मक्का कई साल तक मुब्तला रहे और जिसकी वजह से हर शख्स को जान के लाले पड़ गए थे।

فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ــ76

"तो (इसके बावजूद) ना उन्होंने अपने रब के सामने आजिज़ी इख़्तियार की और ना ही वह गिडगिड़ाए।"

आयत 77

حٰتّٰى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ــ77

"यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे बहुत सख्त अज़ाब का दरवाज़ा, तो जभी वह उसमें बिल्कुल मायूस होकर रह जाएँगे।"

आयात 78 से 92 तक

وَهُوَ الَّذِيۡۤ اَنۡشَاَ لَكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ـــ78 وَهُوَ الَّذِيۡ ذَرَاَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَاِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ـــ79 وَهُوَ الَّذِىۡ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ وَ لَهُ اخۡتِلَافُ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ـــ80 بَلۡ قَالُوۡا مِثۡلَ مَا قَالَ الۡاَوَّلُوۡنَ ـــ81 قَالُوۡۤا ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ـــ82 لَقَدۡ وُعِدۡنَا نَحۡنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنۡ قَبۡلُ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ـــ83 قُلۡ لِّمَنِ الۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ـــ84 سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ـــ85 قُلۡ مَنۡ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبۡعِ وَرَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ـــ86 سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ـــ87 قُلۡ مَنۡۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُوَ يُجِيۡرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ـــ88 سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ فَاَنّٰى تُسۡحَرُوۡنَ ـــ89 بَلۡ اَتَيۡنٰهُمۡ بِالۡحَـقِّ وَاِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ـــ90 مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنۡ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنۡ اِلٰهٍ ۚ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۙ ـــ91 عٰلِمِ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ـــ92

आयत 78

وَهُوَ الَّذِيۡۤ اَنۡشَاَ لَكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ

"और वही है जिसने तुम्हारे लिये बनाए हैं कान, आँखें और अक़्ल।"

قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ـــ78

"बहुत कम है जो तुम शुक्र अदा करते हो।"

आयत 79

وَهُوَ الَّذِيۡ ذَرَاَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَاِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ـــ79

"और वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें फैला दिया है फिर उसी की तरफ़ तुम सब जमा कर दिये जाओगे।"

आयत 80

وَهُوَ الَّذِىۡ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ وَ لَهُ اخۡتِلَافُ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ ؕ

"और वही है जो ज़िन्दा रखता है और मौत देता है, और उसी का काम है दिन-रात को बदलना।"

اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ـــ80

"तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते!"

आयत 81

بَلۡ قَالُوۡا مِثۡلَ مَا قَالَ الۡاَوَّلُوۡنَ ـــ81

"बल्कि इन्होंने भी वही कहा जो इनसे पहले लोगों ने कहा था।"

आयत 82

قَالُوۡۤا ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ـــ82

"उन्होंने कहा था कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे और हमारी हड्डियाँ ही रह जाएँगी तो क्या हमें फिर उठा लिया जाएगा?"

आयत 83

"इसी की धमकी हमें दी जा रही है और इससे पहले हमारे आबा व अजदाद को भी दी गई थी"

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ

"ये कुछ भी नहीं है मगर क़िस्से हैं अगले लोगों के।"

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ــ83

आयत 84

"आप इनसे पूछिए कि ये ज़मीन और जो इसमें हैं सब किसके हैं? अगर तुम जानते हो (तो बताओ)!"

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ــ84

इस सूरह मुबारका का यह आख़री हिस्सा बहुत ही पुर-जलाल है। क़ारी मोहम्मद सिद्दीक़ अल मन्शावी (इनका ताल्लुक़ मिस्र से है) ने इन आयात की तिलावत ऐसे पुरसोज़ अंदाज़ में की है कि इसे सुनते हुए आँसू ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है।

आयत 85

"ये कहेंगे कि अल्लाह ही के हैं! आप कहिये तो क्या तुम गौर नहीं करते?"

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ــ85

आयत 86

"आप इनसे पूछिये कि सातों आसमानों का और अर्शे अज़ीम का मालिक कौन है?"

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ــ86

आयत 87

"कहेंगे कि (ये सब कुछ भी) अल्लाह ही का है! आप कहिये तो क्या तुम (उस अल्लाह से) डरते नहीं?"

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ــ87

तुम लोग अल्लाह को इस दुनिया व मा फ़ीहा का खालिक़ भी मानते हो और उसे अर्श व फ़र्श का मालिक भी तस्लीम करते हो, लेकिन उसके साथ बुतों और देवी-देवताओं को भी उसका शरीक बनाते हो! क्या तुम्हें ये जसारत करते हुए ज़रा भी खौफ़ महसूस नहीं होता?

आयत 88

"इनसे ये भी पूछिए कि कौन है वह जिसके हाथ में इख़्तियार है हर चीज़ का? और जो

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ــ88

पनाह देता है और जिसके मुक़ाबले में किसी को पनाह नहीं दी जा सकती? अगर तुम जानते हो (तो बताओ)!"

आयत 89

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ــ89

"ये कहेंगे कि (ये शान तो) अल्लाह ही की है! आप कहिये कि फिर कहाँ से तुम पर जादू हो जाता है?"

ये कौनसा जादू और फ़रेब है जिसके असर से तुम लोग ये सब कुछ तस्लीम करके फिर शिर्क पर आमादा हो जाते हो?

आयत 90

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ــ90

"बल्कि हम तो इनके पास हक़ ले आए हैं लेकिन ये यक़ीनन झूठे हैं।"

आयत 91

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ

"अल्लाह ने हरगिज़ किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया और ना ही उसके साथ और कोई मअबूद है"

اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

"(अगर ऐसा होता) तब तो हर मअबूद अपनी मख्लूक़ को लेकर अलग हो जाता और इनमें से एक दूसरे पर चढ़ाई कर देता।"

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ ــ91

"अल्लाह पाक है उससे जो ये बयान कर रहे हैं।"

अल्लाह तआला के बारे में ये लोग जिस तरह की बातें करते हैं वह इनसे पाक और बहुत अरफ़अ व आला व मुनज्ज़ह है।

आयत 92

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ــ92

"वह जानने वाला है हर गैब और ज़ाहिर का, चुनाँचे वह बहुत बुलंद है उस शिर्क से जो ये लोग कर रहे हैं।"

आयात 93 से 118 तक

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ﴿93﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿94﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿95﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۭ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿96﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۙ﴿97﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿98﴾ حَتّٰٓى
اِذَا جَاۗءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ﴿99﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَاۗىِٕلُهَا ۭ وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
﴿100﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ وَّلَا يَتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿101﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿102﴾
وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۚ﴿103﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿104﴾ اَلَمْ تَكُنْ
اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿105﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۗلِّيْنَ ﴿106﴾ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا
ظٰلِمُوْنَ ﴿107﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿108﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
الرّٰحِمِيْنَ ﴿109﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا ۭ اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿110﴾ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ
﴿111﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿112﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔـلِ الْعَاۗدِّيْنَ ﴿113﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا
قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿114﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿115﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿116﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿117﴾
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿118﴾

आयत 93

"(ऐ नबी ﷺ!) आप दुआ कीजिये: ऐ मेरे परवरदिगार! अगर तू मुझे वह (अज़ाब) दिखाए जिसकी इन्हें धमकी दी जा रही है।"

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ﴿93﴾

जिस अज़ाब की वईदें इन लोगों को दी जा रही हैं अगर वह मेरी निगाहों के सामने इन पर आ गया तो ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे उससे अपनी पनाह में रखना। गोया हर शख्स को अल्लाह के ऐसे अज़ाब से पनाह माँगते रहना चाहिये। इस ज़िमन में सूरतुल अन्फ़ाल की इस आयत का मज़मून लरज़ा देने वाला है: {وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاۗصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ} "और डरो उस अज़ाब से कि वह (जब आएगा तो) तुम में से सिर्फ़ गुनाहगारों ही को अपनी लपेट में नहीं लेगा, और जान लो कि अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख्त है।" पाकिस्तान के ख़ुसूसी हालात के पेशेनज़र हम सबको ऐसी तन्बीहात के बारे में बहुत ज़्यादा फ़िक्रमंद रहने की ज़रूरत है। इसलिये कि पाकिस्तान इस्लाम के नाम पर बना था। चुनाँचे यहाँ पर शरीअत इस्लामी का अमली निफ़ाज़ हम सबकी ज़िम्मेदारी है। इस सिलसिले में अल्लाह तआला ने जो मोहलते अमल हमें दे रखी है इसे ग़नीमत समझते हुए हम में से हर एक को इस सरज़मीन पर अक़ामते दीन की कोशिश के लिये कमर हिम्मत बाँध लेनी चाहिये। इस फ़र्ज़ की अदायगी से गफ़लत की पादाश में अज़ाबे इलाही का एक कोड़ा हम पर 1971 में पड़ चुका है। अब इससे पहले कि हमारी मोहलते अमल ख़त्म हो जाए और हम दूसरे कोड़े की ज़द में आ जाएँ हमें अपने तन मन और धन को क़ुर्बान कर देने के जज़्बे के साथ इस मैदान में निकलना होगा। हमारे लिये अल्लाह की पकड़ से बचने और दुनिया व आख़िरत में सुर्ख़रू होने का यही एक रास्ता है।

आयत 94

"तो परवरदिगार! मुझे इन ज़ालिम लोगों में शामिल ना करना।"

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿94﴾

आयत 95

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ــ95

"और यक़ीनन हम आपको वह दिखा देने पर क़ादिर हैं जिस (अज़ाब) की हम इनको धमकी दे रहे हैं।"

आयत 96

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۭ

"आप मुक़ाबला कीजिये बुराई का अच्छाई के साथ।"

आप इनकी शरारतों से खूबसूरती के साथ दरगुज़र करें। इन लोगों का आपके साथ जैसा भी रवैय्या हो मगर आपको उसका मुक़ाबला नेकी और भलाई से ही करना है। चुनाँचे आप इनकी गालियों के जवाब में इन्हें दुआ दें और इनके बुरा-भला कहने के बावजूद आप इनको अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहें।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ــ96

"हम ख़ूब जानते हैं उन बातों को जो ये लोग बना रहे हैं।"

जो कुछ ये हज़्ज़ा सराई कर रहे हैं हम इससे ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

आयत 97

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۙ ــ97

"और कहिये कि ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह में आता हूँ शयातीन की छूत से।"

आयत 98

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ــ98

"और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ इससे कि वह मेरे पास आए।"

एक दाई के लिये शैतान की छूत और उकसाहट का एक अंदाज़ ये भी है कि उसे अपनी दावती कोशिशों के दौरान अपने मुखातबीन पर गुस्सा आ जाए और वह उन्हें हक़ की तरफ़ माइल करने की बजाय मुतनफ्फिर कर दे। सूरतुल आराफ़ की आयत 200 में भी ऐसी ही सूरतेहाल से बचने के लिये अल्लाह की पनाह माँगने की हिदायत की गई है।

आयत 99

حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ(99)

"यहाँ तक कि जब इनमें से किसी की मौत सर पर आन खडी होगी तो वह कहेगा: परवरदिगार! मुझे ज़रा वापस भेज दे।"

आयत 100

لَعَلِّيۡۤ اَعۡمَلُ صَالِحًا فِيۡمَا تَرَكۡتُ كَلَّا ؕ

"ताकि जो कुछ मैं छोड़ कर आया हूँ उसमें नेक काम करूँ। हरगिज़ नहीं!"

ऐ मेरे परवरदिगार! अब अगर तू मुझे वापस दुनिया में भेज दे तो मैं अपने माल व असबाब को तेरे रास्ते में और तेरे दीन की ख़िदमत में लुटा दूँगा!

اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ

"ये महज़ एक बात है जो वह कहेगा।"

وَمِنۡ وَّرَآئِهِمۡ بَرۡزَخٌ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾

"और अब उनके पीछे एक बरज़ख़ हाइल है उस दिन तक जब वह उठाए जाएँगे।"

मौत के बाद तो अब बअसे बाद अलमौत तक इनके लिये आलमे बरज़ख की ज़िंदगी है।

आयत 101

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَلَاۤ اَنۡسَابَ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾

"फिर जब सूर में फूँक मारी जाएगी तो उस दिन उनमें कोई नस्बी ताल्लुक़ नहीं रहेगा और ना ही वह एक-दूसरे को पूछेंगे।"

उस दिन हर तरफ़ नफ्सा-नफ्सी का आलम होगा और कोई किसी का पुरसाने हाल नहीं होगा:(अबस:34-37) {يَوۡمَ يَفِرُّ الۡمَرۡءُ مِنۡ اَخِيۡهِ} {وَاُمِّهٖ وَاَبِيۡهِ} {وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيۡهِ} {لِكُلِّ امۡرِىٕ مِّنۡهُمۡ يَوۡمَئِذٍ شَاۡنٌ يُّغۡنِيۡهِ} "जिस दिन इंसान भागेगा अपने भाई से, और अपनी माँ से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। जिस दिन उनमें से हर शख्स की ऐसी हालत होगी जो उसे (दूसरों से) बेपरवाह कर देगी।"

आयत 102

فَمَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۰۲﴾

"तो जिनके (नेक आमाल के) पलड़े भारी होंगे तो वही फ़लाह पाने वाले होंगे।"

ये वह खुशनसीब लोग होंगे जिन्होंने दुनियवी ज़िंदगी में वाक़िअतन अपनी शख्सियत को अपनी रूह के फ़ितरी तक़ाज़ों के मुताबिक़ परवान चढ़ाया था और अपनी खुदी और सीरत की तामीर भी इन्ही पाकीज़ा बुनियादों पर की थी।

आयत 103

وَمَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِيۡنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ خَسِرُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ فِىۡ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿۱۰۳﴾

"और जिनके (नेक आमाल के) पलड़े हल्के होंगे तो वही होंगे जिन्होंने खुद को हलाकत में डाला, वह जहन्नम में रहेंगे हमेशा-हमेश।"

आयत 104

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ١٠٤

"आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और वह उसके अंदर बदशक्ल हो जाएँगे।"

चेहरों के झुलस जाने के बाइस उनकी शक्लें बिगड़ जाएँगी।

आयत 105

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ١٠٥

"(उनसे कहा जाएगा) क्या मेरी आयात तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं, तो तुम उनको झुठलाया करते थे!"

आयत 106

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۗلِّيْنَ ١٠٦

"वह कहेंगे: ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी बदबख्ती हम पर ग़ालिब आ गई थी और (हम तस्लीम करते हैं कि) हम गुमराह लोग थे!"

आयत 107

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ١٠٧

"ऐ हमारे परवरदिगार! (एक बार) हमें यहाँ से निकाल दे, अगर हम दोबारा यही करें तो फिर हम वाक़ई ज़ालिम होंगे।"

आयत 108

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ١٠٨

"अल्लाह फ़रमाएगा: अब तुम ज़लील व ख्वार होकर इसी में पड़े रहो और मुझसे बात ना करो!"

आयत 109

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ١٠٩

"यक़ीनन मेरे बन्दों में कुछ वह लोग भी थे जो कहा करते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आए हैं, बस तू हमें बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा, और तू तमाम रहम करने वालों से बेहतर रहम फ़रमाने वाला है।"

आयत 110

"तो तुमने उनका मज़ाक़ उड़ाया था" فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا

मेरे वह बन्दे जब मुझसे गिडगिडा कर दुआ करते थे तो तुम उन पर हँसा करते थे।

"यहाँ तक कि उन लोगों (का तमस्खुर उड़ाने की मसरूफ़ियत) ने तुम्हें मेरा ज़िक्र भुला दिया" حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ

"और तुम उन पर हँसते ही रहते।" وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ـــ١١٠

तुम लोग मेरे बन्दों की तज़हीक करने और मज़ाक़ उड़ाने में ऐसे मग्न रहे कि मैं तुम्हें बिल्कुल ही याद ना रहा।

आयत 111

"आज मैंने इनको बदला दिया है इनके सब्र के तुफ़ैल, कि आज यक़ीनन वही कामयाब हैं।" اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَاۤىِٕزُوْنَ ـــ١١١

आयत 112

"(फिर) वह उनसे पूछेगा कि तुम लोग कितना अरसा ज़मीन में रहे हो, सालों की गिनती में?" قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ـــ١١٢

आयत 113

"वह कहेंगे कि हम तो रहे हैं (वहाँ) बस एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा, तो आप पूछ लें हिसाब-किताब वालों से।" قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَاۤدِّيْنَ ـــ١١٣

आयत 114

"अल्लाह फ़रमाएगा कि (वाक़िअतन) तुम लोग नहीं रहे हो मगर बहुत थोड़ा ही अरसा, काश कि तुम लोग जानते होते!" قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ـــ١١٤

आयत 84 से शुरू होने वाले सिलसिला-ए-कलाम में ये आख़री चार आयात ख़ुसूसी तौर पर बहुत जामे और पुर जलाल हैं। जैसा कि आयत 84 के ज़िमन में भी ज़िक्र हो चुका है कि सूरत के इस हिस्से की तिलावत क़ारी मोहम्मद सिद्दीक़ अल मन्शावी ने बहुत पुरतासीर अंदाज़ में की है। उनकी ये तिलावत सुनने से ताल्लुक़ रखती है और इसके सुनने से दिल पर एक ख़ास कैफ़ियत तारी हो जाती है:

आयत 115

"क्या तुमने समझा था कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया था और ये कि तुम हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे?"

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾

गुज़िश्ता आयात के स्याक़ व सबाक़ में इस आयत का तर्जुमा सीगा माज़ी में होगा और इस मफ़हूम में इसके मुखातब वही जहन्नमी लोग होंगे जिनका ज़िक्र पीछे से चला आ रहा है। और अगर इसे गुज़िश्ता सिलसिला-ए-कलाम से अलैहदा पढ़ा जाए तो इसका तर्जुमा सीगा हाल में किया जाएगा और फिर इसका मुखातब हर पढ़ने-सुनने वाला और दुनिया के हर ज़माने का हर इंसान होगा कि ऐ लोगो! क्या तुमने ये समझ लिया है कि हमने तुम्हें बे-मक़सद और बेकार पैदा किया है और तुम्हें हमारे पास वापस आकर अपने एक-एक अमल का हिसाब नहीं देना है?

अक़्ली और मन्तक़ी तौर पर ये नुक्ता अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि आख़िरत के तस्सवुर के बगैर इंसानी तख्लीक़ का मक़सद समझ में नहीं आ सकता। अगर इंसान आम हैवानात जैसा हैवान होता तो फिर वाक़ेई हयात बाद अलमौत और आख़िरत की कोई ज़रूरत नहीं थी, मगर हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। हैवानात के बरअक्स इंसान के अन्दर फ़ितरी तौर पर अख्लाक़ी हिस्स और नेकी व बदी की तमीज़ (moral sense) पैदा की गई है। इस अख्लाक़ी हिस्स के नतीजे में इंसानी सतह पर जो अख्लाक़ी इक़दार (moral values) वजूद में आई हैं वह किसी क़ौम, किसी इलाक़े या ज़माने तक महदूद नहीं, बल्कि मुस्तक़िल (permanent) और आफ़ाक़ी (universal) हैं। चुनाँचे "गंदुम अज़ गंदुम बरुवीद जौज़ जौ" (गंदुम से गंदुम उगती है और जौ से जौ) के असूल के मुताबिक़ अच्छाई का नतीजा अच्छा निकलना चाहिये और बुराई का बुरा। लेकिन हम देखते हैं कि दुनिया में हर जगह और हमेशा लाज़मी तौर पर ऐसा नहीं होता बल्कि आमतौर पर इसके बरअक्स होता है। लिहाज़ा ये सूरतेहाल मन्तक़ी तौर पर तक़ाज़ा करती है कि इस दुनिया के बाद एक और दुनिया वजूद में आए, जहाँ हर इंसान की मौजूदा ज़िंदगी के एक-एक फ़अल और एक-एक अमल का एहतेसाब करके मुसद्दक़ा आफ़ाक़ी असूलों के मुताबिक़ अद्ल व इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे करने का अहतमाम हो। यही नुक्ता है जिसे क़ुरान मजीद मुख्तलिफ़ मवाक़े पर ईमान बिल आख़िरत के लिये बतौर दलील पेश करता है। बहरहाल एक ज़ी शऊर इंसान बिलआखिर इस मन्तक़ी नतीजे पर पहुँच जाता है और बे-इख़्तियार पुकार उठता है: (आले इमरान 191) {رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ} "ऐ हमारे परवरदिगार! तूने ये सब कुछ बे-मक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, पस तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले!"

आयत 116

"तू बहुत बुलंद व बाला है अल्लाह, जो हक़ीक़ी बादशाह है।"

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

अल्लाह इस कायनात का हक़ीक़ी बादशाह है। वह कुल्ली इख़्तियारात का मालिक है और इसकी ये हैसियत भी सज़ा व जज़ा के निज़ाम का तक़ाज़ा

करती है। दुनिया के बादशाहों में कोई बादशाह ऐसा नहीं जो अपने गद्दारों और बाग़ियों को सज़ा ना दे और वफ़ादारों को ईनाम व इकराम और खलअतों से ना नवाज़े। फिर ये क्योंकर मुम्किन है कि वह बादशाहे हक़ीक़ी अपने जान निसारों की क़दर अफ़ज़ाई ना करे, उनकी क़ुर्बानियों का उन्हें कोई सिला ना दे और अपने नाफ़रमानों और बाग़ियों को सज़ा ना दे?

لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

"उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, वह बहुत इज्ज़त वाले अर्श का मालिक है।"

आयत 117

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۙ

"और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ किसी और मअबूद को"

यानि अल्लाह को भी मअबूद मानता है मगर साथ ही साथ किसी और को भी पुकारता है

لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۚ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ ۚ

"जिसके बारे में उसके पास कोई दलील मौजूद नहीं है तो उसका हिसाब उसके रब के पास है।"

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

"इसमें कोई शक नहीं के ऐसे काफ़िर फ़लाह नहीं पाएँगे।"

आयत 118

وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

"और दुआ कीजिये कि परवरदिगार! तू हमें बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा, और तू तमाम रहम करने वालों में सबसे बेहतर रहम करने वाला है।"

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایا کم بالآیات والذکر الحکیم۔